मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख सलंग अंक १२९ जनवरी-२०१८

अहमदाबाद मंदिर में धनुर्मास

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१

(१) गांधीनगर सेकटर-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर के अमृतवर्षा महोत्सव के अवसर पर पुस्तक का विमोचन करते हुए और सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) रानीपुरा गाँव में नूतन मंदिर का खात मुहूर्त करते हुए और सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) गांधीनगर सेकटर-२ मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकोरजी के अन्नकूट दर्शन ।(४) पटना में शेठश्री जालन साहेब के वहाँ पटना साहीब गुरुद्वारा के प्रतिनिधियो के द्वारा प.पू. मोटा महाराजश्री का सन्मान ।(५) मोटेरा मंदिर में रात्रि कथा करते हुए शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ।(६) हमारे कानपुर (यु.पी.) मंदिर की प्रतिष्ठा के बाद प्रथम वार दर्शन करने पधारे हुए प.पू. मोटा महाराजश्री और साथ में मंदिर के जमीन के दाता श्री राजेन्द्रभाई पटेल परिवार ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२९

जनवरी-२०१८

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	संध्या	०६
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की मुख से अमृत वचन	०८
०५.	नित्य भजन करने योग्य गुरु	११
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०६.	सत्संग बालवाटिका	१५
०७.	भक्ति सुधा	१७
०८.	सत्संग समाचार	२१

अस्मदीयम्

''प्रत्यक्ष भगवान की जो मूर्ति हे और दूसरी जो मायावी आकार होते हैं इन दोनो में बहुत फर्क है। लेकीन जो अज्ञानी है या मूर्ख है वह भगवान और इस मायावी आकार को एक समान जानता है क्योंकी वह मायावी आकार को ही देखता है और उसका ही सदा चिंतन करता है। ओर इसीलीये वह अनंत कोटी कल्पतक यह नरक चोराशी में धूमता रहता है। और जो भगवान के स्वरुप का दर्शन करता है और नित्य भगवान के स्वरुप चिंतन करता है वह काल, कर्म और माया इन सभी के बंधन से मुक्त होकर अभय पद प्राप्त करता है और भगवान का पार्षद बन जाता है। इसलीये हमें तो कभीभी भगवान की कथा कीर्तन या वार्ता या फीर भगवान के ध्यान से मनको कभीभी तृप्ती नही होती है, और इसलीये आप सब को ही एसा ही करना है।'' (ग.म.व.-४९)

यह बात समजने जेसी और हृदय में उतारने जेसी है। भगवान को दूसरो जेसा जानना यह भी अपने आप में एक बड़ा अपराधहै। भगवान तो भगवान है उसकी उपमां कीसी और को नहीं दे सकते एसा ध्यान हमे रखना है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१७)

८-१० श्री स्वामिनारायण मंदिर मुंद्रा (कच्छ) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण ।
११ श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर (ईडर देश) कथा के अवसर पर पदार्पण ।
१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीपुरा के नूतन मंदिर के खात मुहूर्त के अवसर पर पदार्पण एवम् ईलोल (तह. हिंमतनगर) रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।
१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली सत्संग सभा के अवसर पर पदार्पण ।
१८ संतरामपुर (पंचमहाल) गाँव में कथा के अवसर पर पदार्पण ।
१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर जामसर (हालार-मूली देश) शाकोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।
२० श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा कथा के अवसर पर पदार्पण ।
२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा कथा के अवसर पर पदार्पण ।
२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका शाकोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।
२३-२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण ।
२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२३) पदार्पण ।
(शाम) श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा के अवसर पर पदार्पण ।
२७-२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।
३१ से २ जन.-२०१८ मांडवी (कच्छ) कन्या छात्रालय के उद्घाटन के अवसर पर पदार्पण ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१७)

१० कुबडथल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सत्संग युवा शिबिर अपनी अध्यक्षतामें संपन्न हुई ।
१७ बालवा गाँव में कथा के अवसर पर पदार्पण ।
२३ बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।
३१ बापुपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।

संध्या

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

ब्रह्माजी ने एकबार अपनी दाही जंगा में से एक पुरुष उत्पन्न किया और बाही जंगा में से स्त्री उत्पन्न की । पुरुष के नाम कामदेव और स्त्री का नाम संध्या रखा । स्त्री पुरुष दोनो की बहुत ही सुंदर, स्वरुपवान, मनमोहक काया देखकर देवोके मन भी मोहित हो गये । त्रिलोकी देवो ओर दानव सभी इन दोनो की सुंदर काया देखते थे और उनसे दूर नही जाते थे और उनको अपने सेवक बनाने के लीये तरह तरह के लालच, प्रलोभन, स्तुती, प्रार्थना के द्वारा दोनो को वशीभूत करने के उपाय करने लगे । मोहान्द हो चुके देवो से कामदेव और संध्या दोनो त्राहिमाम हो गये और ब्रह्माजी के कहने से दोनो भगवान भोलानाथ सदाशीव के शरणमे गये ।

दोनो कैलाश पर्वत बिराजमान सदाशिव के शरणमें जागर यह प्रार्थना की, ''हे शंभु आप हमारी रक्षा करो ।'' कामदेवजी कहते हैं की जहा पर भी हमारी द्रष्टि जाती हे वहा सभी लोग हमारे रुप को देखकर मोहीत हो जाते है । हमारे स्वजन भी हमको कामद्रष्टि से देखने लगे है । आजदीन तक ऐसे कोई भी नही जीसके मन में हमे देखकर राग उत्पन्न न हुआ हो ।

कामदेव की प्रार्थना गर्वीष्ठ थी इसलीये भोलानाथ बोले, ''हे दुष्ट ! तेरा रुप देखकर त्रिलोकी क्यों न मोहीत हो जाता हो लेकीन मे तुजे भस्म कर दुंगा,'' कामदेवने क्षमा की प्रार्थना की और महादेव को प्रसन्न कीया ।

संध्या देवीने शंभु के शरण में जाकर प्रार्थना की, ''हे प्रभु मेरी काया पर मेरे स्वजनोने ही क्रुद्रष्टि की है तो मेरा रुप अग्निमें लुप्त हो जाये ऐसी कृपा करे ।''

शिवजीने वरदान दीया की, ''हे देवी आपके जन्म से ही आपको देखकर सभी देवगण मोहीत हुए है तो आपका बचपन व्यर्थ गया है तो आज से मानव सृष्टिनी जन्म से सोलह साल तक कीसी को कामदेव की द्रष्टि की कामवासना उत्पन्न नही होगी ।''

शिवजी की आज्ञा से संध्या देवी चंद्रभागा नदी के तट पर इस बात को सुनकर मेघातिश्री मुनि यज्ञ कर रहे थे वहा आये । मुनिने मंत्र प्रभाव से संध्यादेवी की काया अग्निरुप सुवर्णमय होकर सूर्यलोग में पहोंची वहाँ भास्कर सूर्यदेव ने सुवर्णरुप संध्या के साथ विवाह किया ।

सूर्यदेव को अपनी पत्नी संध्यासे तीन संतान की प्रासु हुई । जो वैवस्वतमनु, यदेव और यमुना थे ।

वैवस्वतमनु अब मन्वन्तर कहलाते है । यमदेव जो धर्मराजा और यमराजा के नाम से भी पहेचाने जाते हैं । वे सभी जीव के पाव और पुण्य का निर्णय देते हैं । यमुनादेवी गोलोक में भगवान श्री कृष्ण की महाराणी की रुप में और पृथ्वी पर जल स्वरुप प्रगट व्रजभूमि में विराजीत है ।

सूर्यनारायणदेव अपनी पत्नी संध्या से अति मोहित थे इसीलिये नित्यकर्म पूजा-पाठ-पुरश्चरण के सयम संध्या का सांनिध्य नही छोडते थे । संध्यादेवी ने सूर्यदेव का यह मोह उतारने के लीये अपने योग ऐश्वर्य की ताकात से अपनी जैसी ही छाया उत्पन्न कर उसको सूर्य के साथ रखकर खुद कठीन तपश्चर्या करने लगे ।

मोह से बधे हुये सूर्यदेव अपनी पत्नी की छाया को पहचान न शके और उसके द्वारा एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम शनिदेव रखा गया ।

शनिदेव जन्म से ही बडे शूरवीर और शरारती स्वभाव के थे । वे अपने बंधुओ को बिना कोई दोष दंड देते थे इसीलिये सूर्यदेवने क्रोधीत होकर उनको श्राप दीया और शनिदेव एक पैर से पंगु हो गये । उस दीन से शनिदेव की गति मंद हो गई ।

एकबार नारदजी सूर्यदेव के पास आये और संध्या के बारे में पूछा, नारदजीने कहा, ''हे देव आप पूरे संसार को प्रकाशीत करते हैं लेकीन आप अपने घर में नही देख शकते हैं । आपकी संध्या कही सालो से वन में तप कर रही है । जो आप नही जानते है और छाया-संध्या आपकी सेवा में हैं ।''

सूर्यदेव क्रोपायमान होकर छाया को श्राप दीया की, ''तुने कपट से मेरे द्वारा संतान प्राप्त कीया है तो मेरा पुत्र मेरा

शत्रु बनकर रहेगा।(जो आज ही सूर्य-शनि एक दुसरे के शत्रु है)।

सूर्यदेव तुरंत ही वन में तप कर रही संध्या देवी के पास गये है। तब संध्याने अपना रुप छुपा दीया और वह अश्व बन गये। संध्या के पीछे मोहान्धसूर्यभी अश्व बन गये और दोनो के द्वारा अश्विनीकुमार नाम से पुत्र हुये। जो इस विश्व के महान वैद्य बने।

संध्या के पीछे सूर्यनारायण अश्वरुप बन गये इसलीये पूरा त्रिलोक अंधकारमय हो गया और देव-मनुष्य-असुर सब त्राहिमाम त्राहिमाम हो गये।

ब्रह्मा-विष्णु-शिव के साथ नारदजी सूर्यदेव के पास आये और उन्होने सूर्य और संध्या देवी को प्रार्थना की, ''हे सूर्यदेव ! संध्या देवी की तपश्चर्या के प्रभाव से आप अति तेजस्वी बन गये हो। शीघ्र ही आप जगत को दर्शन दीजीये और उसको रोग एवम शोक से मुक्त करके उसे तेजस्वी बनाईये। यह संध्यादेवी सदैव आपके साथ रथ में ही रहेगी और उनके सुवर्णमय तेज से विश्व प्रकाशित होगा और आपके तेज से पहले संध्यादेवी का तेज प्रगट होगा। आपके दर्शन के जगत का कल्याण होगा। संध्या के दर्शन से और संध्या के आगमन के समय पर जो भी व्यक्ति जप, तप, व्रत, दान, पूजा, पाठ, मंत्र, पठन, स्मरण और कीर्तन करेंगे उनको अक्षय महापुण्य फल प्राप्त होगा।

उदय और अस्त की संध्या के दर्शन से पापी भी अपने आपसे मुक्त होकर सत्कर्मका अधिकारी होगा।

अब से जब तक यह विश्व रहेगा तब तक सूर्य और संध्या का वियोग नही होगा और जो संध्या दर्शन करेंगे उनके आपस के प्रेम में वृद्धि होगी। संध्यादेवी ने अश्व का रुप धारण कीया इसीलीये जो पुरुष अश्व पर बेठकर विवाह करने जायेगा उसका दाम्पत्य जीवन में आपस प्रेम अतूट रहेगा।

आदि सत्ययुग की यह कथा है सूर्यदेव की दूसरी पत्नी होने के बावजूद संध्यादेवी सूर्यनारायण के साथ रथ में बीराजती है और वह भी सूर्यनारायण की तरह अति तेजस्वी है। सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद जीस सुवर्णमय तेज का दर्शन हम करते हैं वह स्वयं संध्यादेवी है।

उस समय से प्रातः संध्या और सायम् संध्या के समय को शास्त्रज्ञो ने जप, तप, व्रत, पूजन के सर्वोत्तम पुण्यकाल कहा है। जो भी व्यक्ति प्रातः सायम और मध्यान्ह समय पर पूजा, पाठ, जप, तप, पूजन इत्यादि करता है उसे सहस्त्रघपुण्य फल मीलता है।

हमारे आर्षद्रष्टा ऋषि मुनियोने त्रिकाल संध्या की पूजा निश्चित की है। वैदिक हिन्दु परंपरा के अनुयायी त्रिकाल संध्या अवश्य करते हैं।

जो लोग प्रवृतिमार्ग में जुडे हुये है उनको त्रिकाल संध्या की पूजा अवश्य करनी चाहीये। अगर त्रिकाल संध्या न हो शके तो प्रातः और सायम संध्या अवश्य करनी चाहिए।

जो लोग संध्या के समय पूजा-पाठ-जप करते हैं वे लोग ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि देवोने दीये हुये वरदान के अधिकारी बनते हैं।

संध्या के समय पर अगर कोई व्यक्ति आरती, प्रार्थना, पूजा, नही करता तो उसका आध्यात्मिक जीवन शून्य हो जाता है और उसके मून पर आशूरी तत्व का प्रभाव बढ जाता है।

सर्वावतारी श्री सहजानंद स्वामीने शिक्षापत्री श्लोक नं. ६३ में निजाश्रीतो को यह आज्ञा दी है के, ''हमारे आश्रीत सभी सत्संगीजन नित्य (सायम्) काल के समय भगवान के मंदिर जाये और उस मंदिर में विराजीत श्री राधिजीके पति ऐसे श्रीकृष्ण भगवान के नाम का उच्चस्वर से कीर्तन करे।''

प्रातःकाल के समय अपने घर पर पूजा करने को कहा है और सायम काल के समय यानी के संध्या के समय मंदिर में कीर्तन करने के लीये जाने की आज्ञा दी है। और श्लोक नं. १८८ मे गृहस्थाश्रमी के विशेष धर्ममें कहा है की ''जो लोग ब्राह्मण है उन्हे संध्या कीये बीना भोजन नही करना है।''

वैदिक और पौराणिक पूजा विधिमें प्रातःकाल और संध्यापूजा की पुष्टि की गई है। प्रवृतिमार्ग में जुडे होने के बावजूद संध्या के समय पर पूजा दर्शन अवश्य करे।

वैष्णवी पूजा विधिमें संध्या के समय पर विशेष पंचोपचार पूजा करने के बाद सभी मुमुक्षु ठाकोरजी के मुख दर्शन अवश्य करे। दिप ज्योती सुवर्ण स्वरुप स्वयं संध्या देवी के प्रतिक के रुप में प्रगट करके परमात्मा को निवेदन कीया जाता है। अग्नि तत्त्व संध्या की काया है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की मुख से अमृत वचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कलोल (पंचवटी) मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर दिनांक २७-११-२०१७ : भगवान बडे ही स्वरुपवान है उत्तर गुजरात के हरिभक्त बडे ही भाग्यवान है । पीछले कही सालो से हम ओर पी.पी. स्वामी ईत्यादि संत यह विचार करते ते थे की इस विस्तार में बहुत सारे हरि मंदिर है । छोटे बड़े गावो में साल में दो बार हम जाते हैं । इसीलिये हम बहुत सारे हरिभक्तो को पहचान ते भी है लेकीन सत्संग के विशेष संवर्धन के हेतु और जहाँ पर सभी हरिभक्त एकठा हो सके और उत्सव समैया भी आयोजीत हो शके और सभी हरिभक्तो को भगवान के दर्शन हो शके इसके लीये कलोल केन्द्रीय स्थान है । इसके बारे में हमने चर्चा की आज इस अवसर पर दशरथभाई और जी. के. पटेल जैसे हरिभक्त बैठे हैं । उनको पता है कि उस समय पर रुपियो की बहुत व्यवस्था नहीं थी और सब कुछ दुसरो से मांग कर एकट्ठा करना पडे एसी परिस्थिति थी । इसके बावजुद सभी लोगने साथ मीलकर यह जमीन खरीद ली जीस में यह कलोल स्थान का बहुत बडा योगदान है। देश विदेश में हम जब भी जाते थे और जब वहाँ पर उत्तर गुजरात का हरिभक्त मील जाता था तब वो पूछता था की कलोल मंदिर की प्रतिष्ठा कब है ? या फीर हमको प्रतिष्ठा की दिनांक बताते हुये हमे कहते थे की वे लोग प्रतिष्ठा महोत्सव में दर्शन के लीये आने वाले हैं । इतना बड़ा उत्साह सारे हरिभक्तो में था । तो बात यह थी की भगवान बड़े ही स्वरुपवान है । हमारा मंदिर भी बहुत सुंदर है और यहा पर उत्तर गुजरात का सत्संग भी बहुत अच्छा है । यह भूमि बहुत ही पवित्र है । यहाँ के गाँवो में महाराज अनेकबार आये हुये है । आज यहाँ पर बैठे हुये हरिभक्तो के समग्र परिवार को अपने पूर्वजो से मिला हुआ सत्संग और संस्कार दोनो ही संभालने है और उसका संवर्धन करना है और इसके लीये यह मंदिर है । कोई कुछ भी कहे लेकीन मंदिर अनिवार्य है, मंदिर के बिना छुटकारा नही । हमने यह कही नहीं देखा की भगवान और मंदिर के बिना किसी का उद्धार हुआ हो । अंत में तो कोई भी व्यक्ति ''हे भगवान'' एसा ही उच्चारण करता है !

हम सब लोग बडे ही भाग्य शाली है की हम को भगवान और सत्संग की यह परंपरा मिली है । हमारी यह जीम्मेवारी है की यह परंपरा चालु रहे । आप सभी यहा पर बैठे हो दूसरी और युवाओ के बड़ी दस्त है जो सेवा में लगी हुई है । उनके भविष्य की पीढी और उनके बाद भी भविष्य की पीढी में संस्कार, सत्संग और भगवान बने रहे यह जिम्मेवारी हम सब की है । **धन-संपत्ति तो सभी लोग संभालते है लेकिन अगर हम हमारे बच्चो को सुखी करना चाहते है या तो सुखी देखना चाहते हे तो भगवान के बिना कोई उद्धार नहीं । मेरी यह बिनती है की आप अपने बच्चो को भगवान दीजीये । मकान और व्यवसाय के लीये दुकान वे लोग वैसे ही लेने वाले हैं ।** भगवान और संस्कार दीये नही जा सकते । अगर कोई कहता है की हम अच्छे संस्कार देगे तो वह उनकी शक्ति भी नहीं है और क्षमता भी नहीं है ! हा यह जरुर है की हम इसके लीये एक

अच्छा वातावरण जरुर खडा कर सकते हैं। आप प्रयत्न कीजीये। आप अपने बच्चो से यह कहना की सुबह उठना ऐसा करा, वैसा करना। और शाम को जब देखेंगे तो सब कुछ उल्टा होगा!

जो भगवान मंदिर मैं है वही भगवान हमारे घर में भी बिराजमान है। सिंहासन या भगवान के बिना आज एक भी घर नहीं है। स्वामिनारायण भगवानने कहा है की जब भी घर में रसोई तैयार हो जाये तो हमारे घरमें बिराजमान ठाकोलजी को थाल अर्पण करने के बाद ही प्रसादी रुप अन्न ग्रहण करना चाहीए। हम इस विश्वा में दूसरी बहुत मेहनत करते हे लेकिन क्या हम अपने घर में ४ से १० साल के बच्चो को ठाकोरजी को थाल अर्पण करने को कहते हैं? या फीर कही जगह पर तो शायद भगवान सिंहासन में सींगसाकरीया ग्रहण करते हैं और हम सब माल-पूवा खाते हैं ऐसा भी हो शकता है? सभा में महिला हरिभक्तों की संख्या नित्य बहुत सारी होती है। सांख्ययोगी महिला हरिभक्त भी यहाँ पर आये हुए है। हमारे रसोई घर की देखभाल महिलाओ के हाथ में रहती है। छोटी आयु के बचो को अगर आप थाल अर्पण करने को कहेगें तो हलचल मच जायेगी लेकीन तुरंत भोजन लेने की अभिप्सा से वे ठाकोलजी को थाल अवश्य अर्पण करेंगे। छोटी आयु में अगर दो-तीन बार भी उन्होंने थाल अर्पण कीया है तो वहीं बच्चे जब ३५-४० या ५० साल के बड़े हो जायेगे तो तब उन्हें यह याद रहेगा की मेरे माता-पिताजी मुजे सिंहासन में बिराजमान ठाकोरजी को थाल अर्पण करने के लीये भेजते थे। तो फीर कुल मिलाकर छोटी-छोटी बातो से ही यह विश्व बड़ा होता है और संस्कार एक अच्छा वातावरण भी निर्माण होता है।

यहाँ पर बैठे हुए वयस्क हरिभक्त जानते है और अगर आप उसने पूछेगे तो वे बतायेगे की बारीश की मौसम में हमारे संत गाँव में नाम-धर्मादा लेने के लीये और कथा-वार्ता करने के निमित्त जाते थे। उस समय ठाकोरजी की प्रसादी मिलती थी और उस प्रसादी का स्वाद इतना अच्छा लगा था की वे सब आज भी यहाँ पर बैठे हुए है। हमारे एक संत मुजे कहते थे की वे छोटे थे तब उनके गाँव में संत आते थे और साथ में ठाकोरजी का प्रसाद सब को देते थे। और वे सब २०-२५ लडके उसी प्रसादी को लेने के लीये ही जाते थे। इसी प्रसादी की वजह से वे मंदिर में आने लगे और बाद में दिक्षा ग्रहण की। **आज आप विचार करे यही साधु आज बहुत सारे लोगो को भगवान की पहचान कराते हैं। प्रसाद और भगवान का यही तो महत्व है इसीलीये वातावरण से संस्कार निर्माण होते हैं केवल उपदेश से संस्कार नही निर्माण होते।**

हम अपना कोई भी काम हो जाये इसके लीये कुछ ना कुछ भेट देने के लीये आदि है। इसी बात को किसी अच्छी चीज के लीये या तो फीर हमारे बच्चो के लीये संस्कार के लीये भी प्रयत्न कर सकते हैं। हम अपने बच्चो को यह कह सकते हैं की अगर वह ठाकोरजी को थाल अर्पण करते है तो उसको चोकलेट मीलेगी। अगर वह एक हप्ते तक नित्य भगवान की भक्ति करेगा तो फीर उसे हम घुमने के लीये ले जायेंगे। वैसे भी हम अपने बच्चे जो भी चाहे वो हम उसे लाकर देते हैं तो क्युं न हम इसका सभी रास्ते पर उपयोग करे। किसी की इर्ष्या करना यह बात ठीक नहीं है। ईर्ष्या वह दोष है तो भी वचनामृत में महाराजने कहा है की अगर इर्ष्या करनी हो तो नारद और उनके तुंबरु जैसी करना। दूसरे व्यक्ति में जो भी अच्छे संस्कार है वे हमारे अंदर आये। यह मंदिर, यह संत, यह सभा मंडप इनसे अच्छे संस्कार का

वातावरण का निर्माण होता है।

इस सभा मंडप में वयस्क संत भी बैठे हुये है। भुज के महंत स्वामी की आयु ८४ साल है। यह श्याम स्वामी की आयु ८५ साल है। आप कल्पना कीजीये. ५०-५० साल से ये सत्संग की अविरत सेवा करते आये हैं। हम तो एक दिन भी अगर निकालना हो बड़े परेशान हो जाते है ! यहाँ पर भक्ति स्वामी, जगतप्रकाश स्वामी और भी अनेक युवा संत बैठे हुये है। किसी को यह लगता होगा की इस संत को सब कुछ सुलभ है और अच्छा भी है। लेकिन अगर आप हमारे साथ दो दिन रहेंगे और साथ चलेगें तब पता चलेगा क्योंकी कभी कभी उनको ठीक तरह से खाना भी नहीं मिलता फिर भी ये लोग हमारे साथ रहते हैं क्योंकि उनको भगवान चाहीये। आप सभी को भी भगवान चाहीए इसलीये तो एसे मंदिर निर्माण होते हैं।

यह बात बहुत स्पष्ट है की नरनारायणदेव के देश में जो भी मंदिर निर्माण होते हैं वह केवल पथ्थर या सिमेन्ट से नहीं होते लेकिन संत और हरिभक्त की भावना से निर्माण होते हैं। यह हकीकत है कि सभी हरिभक्तो के भाव और प्रेम की वजह से इस भगवान की मूर्ति परस्मित है। मूर्ति बडी स्वरुपवान लगती है। इस दुनिाय में बहुत सारे जगह पर सोने की मूर्तिया निर्माण की जाती है लेकिन उस मूर्ति में भाव नहीं आता हमारे मंदिरो में पंचमहाल से लेकर मांडवी तक कोने-कोने में भगवान की मूर्तिया स्मित देती है। इसकी वजहा आप सबकी भावना है। आप का योगदान, पैसे का नही लेकीन समय का योगदान बड़ा ही महत्वका है। कल ही अमेरिका से आये हुए एक व्यक्ति को यहाँ आने की वजाह पूछी तो बताया की वे केवल इस प्रतिष्ठा उत्सव के दर्शन के लिये ही यहा पर आये है ! विदेश से बहोत सारे हरिभक्त यहाँ पर आये हुये है। वे सब भगवान से जुडे हुये है। अगर हम किसी शादी-विवाह में जाना हो, और वह भी इतनी दूर तो हम १० बार इसके बारे में विचार करते हैं कि जाये या न जाये ! तो फिर भगवान के दर्शन के लिये इतनी दूर यहाँ पर आना यह बहोत ही कठीन है। हम अपनी नोकरी-व्यवसाय में छुटी रखकर, दूसरी वैकल्पीक व्यवस्था करके के और परिवार को छोडकर यहाँ पर आते हैं। यह अपने आपमें बड़ी बात है। हमारे महिला हरिभक्त भी जब कथा सुनने पर जब आते है तब घर के दूसरे सारे काम इतनी जल्दी से निपटाते है तब जाके इस सभा मंडप में समय पर पहोंते हैं।

बहुत सारे अमृत वचन कह कर अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान हरिभक्त सहित सभी को शुभ आशीर्वाद दिये थे।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

नित्य भजन करने योग्य गुरु

- અતુલ ભાનુપ્રસાદ પોથીવાલા (અમદાવાદ)

॥ श्रीगुरु भजन स्तोत्रम्, वियोगिनीवृत्तम् ॥

भवसंभवभीतिभेदनं सुखसम्पत्करुणानिकेतनम् ।
व्रतदानतपः क्रियाफलं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥१॥
करुणामयचारुलोचनं शरणायातजनार्तिमोचनम् ।
पतितोद्धरणाय तत्परं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥२॥
निजतत्त्वपथावबोधनं जनतायाः स्वत एव दुर्गमम् ।
इति चिन्त्य गृहितविग्रहं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥३॥
विधिशंभुमुखैरनिग्रहं भवपाथोधिपरिभ्रमाकुलम् ।
अपिधार्यमनो नरप्रभं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥४॥
निजपादपयोजकीर्तनं सततं स्याद्भवजीवगोचरम् ।
इति यः कुरुते क्रतूत्सवं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥५॥
बहिरीक्षणलोकमानुषं निजजत्ताम्बकदर्शिनां हरिम् ।
भजनियपदं जगद्गुरुं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥६॥
शरणागतपापपर्वतं गमयित्वा न तदीयसद्गुणम् ।
अणुमप्यतुलं हि मन्यते सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥७॥
भववारिधिमोक्षसाधनं गुरुराजप्रकटस्वसंगमम् ।
प्रकटीकृतवान् कृपावशः सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥८॥
भगवन् कृपया त्वया कृतं जनतायामुपकारमीदृसम् ।
क्षमते प्रतिकर्तुमत्र कः कुरुते दीनजनस्ततोऽञ्जलिम् ॥९॥

जीस व्यक्ति को अपना मोक्ष प्राप्त करना है और परमेश्वर के अविनाशी अक्षरधाम को प्राप्त करना है उसके पास भक्ति करने योग्य गुरु होने चाहिये। इस बात का बहोत ही सुंदर वर्णन इस स्तोत्र में पंडीत श्री दिनानाथ भट्टजीने कीया है।

भवसंभवभीतिभेदनं सुखसम्पत्करुणानिकेतनम् ।
व्रतदानतपः क्रियाफलं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥१॥

जीस गुरु के पास उसके पास आये हुये मुमुक्षो के मनमें से जन्म और मृत्युं का भय दूर करने का सामर्थ्य है और जो सभी सुख और संपत्ति की एकमेव आश्रयस्थान है फिर भी अपने पास आये हुये सभी के लीये करुणा के सागर जैसे हैं और जो शास्त्रो में लीखीत सभी व्रत और अनेक प्रकार के दान एवम् धार्मिक सभी रुप की क्रियाओ के फल स्वरुप है। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(१)

करुणामयचारुलोचनं शरणायातजनार्तिमोचनम् ।
पतितोद्धरणाय तत्परं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥२॥

जीव मात्र के प्रति करुणामय द्रष्टि से सुंदर नेत्र के द्वारा देखने का जीनका स्वभाव है और जो अपनी शरणमें आये हुये सभी भक्तो के तीन प्रकारे के दुःख से उनको मुक्त करते हैं और अति पापी और पतित जनका भी उद्धार करने के लीये जो सदा तत्पर रहते हैं। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(२)

निजतत्त्वपथावबोधनं जनतायाः स्वत एव दुर्गमम् ।
इति चिन्त्य गृहितविग्रहं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥३॥

इस लोक के जीवात्मा को मोक्ष को वेदो में सुचीत कीये गये मार्ग से ही प्राप्त होता है। उस वेद की श्रुति कहती है - ऋतेः ज्ञानान्न मुक्ति। परमेश्वर के स्वरुप के यथार्थ तत्वज्ञान से ही आत्यन्तिक मोक्ष की प्राप्ति होती है और इस परमेश्वर के स्वरुप का ज्ञान तो केवल कृपा साध्य ही है। क्योंकि दिव्य और सूक्ष्म स्वरुप का ज्ञान कीसी भी साधन के द्वारा नहीं होता। जैसे की किसी व्रत, दान, तप, त्याग या फिर योग की साधना जैसे अति कठीन उपचार करे या फिर बडे-बडे यज्ञ करे फिर भी परमेश्वर के स्वरुप का ज्ञान होना बड़ा ही दुष्कर है। और इस ज्ञान के बिना इस जीवात्मा को आत्यंन्तिक मोक्ष अर्थात् अक्षरधामकी प्राप्ति नही होगी और अनगीनत जीवात्मा को अपने दिव्य ऐसे अक्षरधाममें ले जाने के लीये स्वयं सर्वोपरी परब्रह्म परमात्माने अपने तत्व स्वरुप का ज्ञान सभी लोगो को देने के लीये मनुष्य देह धारण

कीया है। और वह मनुष्य जैसा ही साधारण आचरण करते हैं। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(३)

विधिशंभुमुखैरनिग्रहं भवपाथोधिपरिभ्रमाकुलम् ।
अपिधार्यमनो नरप्रभं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥४॥

इस जगत के जीवात्मा का मन जब तक परमेश्वर में स्थिर नहीं होता तब तक उसे परमेश्वर के स्वरुप का यथार्थ ज्ञान नहीं होता। और मन तो बडा ही चंचल है। ऐसा श्रीमद् भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है - चंचल हि मनः। एसे चंचल मन का निग्रह करना ब्रह्मा, शिव जैसे बडे बडे देवताओ के लीये भी मुश्कील है, तो यह जीव जो अनादीकाल से इस संसार सागर में भटककर अति व्याकुल हुआ है वह जीव अपने मन का निग्रह कैसे कर सकेगा। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(४)

निजपादपयोजकीर्तनं सततं स्याद्भवजीवगोचरम् ।
इति यः कुरुते क्रतूत्सवं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥५॥

भगवान श्री स्वामिनारायणने वचनामृत में कहा है की अपने मन को भगवान के चरित्र की जाल में उलजाये रखना तब यह अती चंचल मन कीसी और पदार्थ में न जाय तो ऐसे चरीत्र जीव को देखने और सुनने को मीले और उसका गान करने का अवसर मीले इसीलीये परमेश्वर ने सव्यं मनुष्याकृति धारण करके जगत के जीव मात्र को अपने चरण कमल के दर्शन, स्मरण, कीर्तन का योग हो ऐसे कल्याणकारी हेतु से जो विष्णुयाग इत्यादि बडे बडे समैया करते हैं। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(५)

बहिरीक्षणलोकमानुषं निजजत्ताम्बकदर्शिनां हरिम् ।
भजनियपदं जगद्गुरुं सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥६॥

जगत के लोगो को जो बाह्य दृष्टि से मनुष्य जैसे ही दीखते है। लेकीन जीनके उपर परब्रह्म परमात्मा श्रीहरिने कृपा की है ऐसे एकान्तीक भक्तो के लीये तो वे साक्षात् अक्षरधामवासी परमेश्वर ही है और उनके चरण कमल नित्य सेव्य योग्य है। क्योंकी वो ही इस पुरे विश्वके एक मात्र गुरु है। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(६)

शरणागतपापपर्वतं गमयित्वा न तदीयसद्गुणम् ।
अणुमप्यतुलं हि मन्यते सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥७॥

इस जगत के जीवात्माने अपने सभी जन्मो के प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण ऐसे तीन प्रकार के पाप कर्म अपने साथ पर्वत की तहर चीपके हुये है। लेकिन अगर यह जीव श्रीहरि की शरण में आता है तो उनके यह इतने बड़े सभी पापो को वे नही देखता। लेकिन उनमें अगर बडी अल्पमात्रा में भी कोई सदगुण है तो उसे देखकर वे उसको अपना एकान्तीक भक्त बनाते हैं। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(७)

भववारिधिमोक्षसाधनं गुरुराजप्रकटस्वसंगमम् ।
प्रकटीकृतवान् कृपावशः सहजानन्दगुरुं भजे सदा ॥८॥

जीवात्मा को इस विकट संसार सागर को पार करने के लीये और आत्यन्तिक मोक्ष की प्राप्ति करने के लीये अपना सानिध्य - रुप आश्रय मील शके इसलीये कृपावश हो कर मनुष्य देह धारण करके योग दीया है ऐसे गुरुओ के भी गुरु राजाधिराज जो केवल अपनी कृपा से प्राप्त होते हैं। एसे सभी जीवो के योग्य गुरु एसे मेरे गुरु भगवान श्रीहरि श्री सहजानंद स्वामी का में अखंड रुप से सर्वदा भजन करता हुं।(८)

भगवन् कृपया त्वया कृतं जनतायामुपकारमीदृसम् ।
क्षमते प्रतिकर्तुमत्र कः कुरुते दीनजनस्ततोऽञ्जलिम् ॥९॥

हे परंब्रह्म परमात्मा भगवान श्री सहजानंद स्वामी, आपने कृपा करके इस लोक में मनुष्य देह धारण करके जगत की जीव प्राणी मात्र को सेवा, पूजा और दर्शन देकर जो बडा उपकार कीया है जीस को कैसे वापस कीया जाये ऐसी बुद्धि इस विश्व के कीसी जीव के पास नही है। और इसलिये इसका ऋण हम चुका सके इस हेतु हे प्रभु मे दीन ऐसा दीनानाथ भट्ट आपके श्रीचरणो में केवल अपने दो हाथ जोड कर अंजली रुप नमस्कार करके विनय से खडा हुं।(९)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

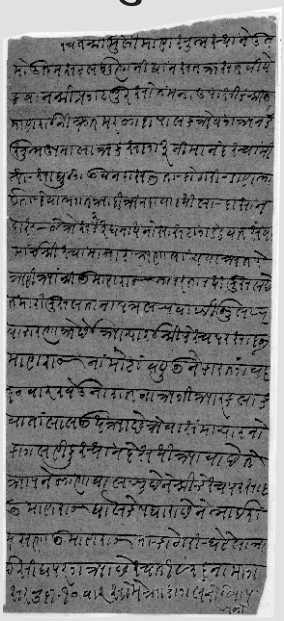

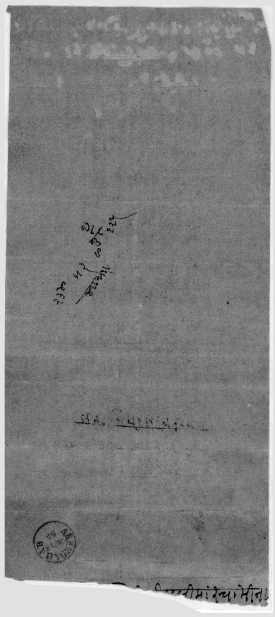

इस संप्रदायमें श्रीजी महाराजने अखंड रुप में प्रत्यक्ष रहने के लीए तीन गूढ संकल्प कीये और उस मुताबीक भगवत स्वरुप प्रतिष्ठा की और निरामय और निर्मल धर्मवंशी आचार्य पद की रचना की और शिक्षापत्री आदी सद्ग्रंथो की स्वयं रचना की और इन तीनो स्वरुप में वे स्वयं सत्संग में आज प्रत्यक्ष रुप में विराजमान है।

श्रीजी के अपर स्वरुप एसे आचार्य महाराजश्री इस सत्संग की हृदय की धबकार है । स्वयं श्रीजी महाराज उन्हे यहाँ इस पृथ्वी के अक्षरधाम से भेजते हैं और उस शुभ समय पर इस भूमंडल में आनंदोत्सव छा जाये वह स्वाभाविक है।

उस समय में संदेश के आदान प्रदान के साधन मौजुद नहीं थे, मुसाफरी मुस्कील और कष्टदायक थी इसीलीये समाचार को पहोंचाने में स्वाभाविक रुप से विलंब होता था।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश की गादी के दूरसे आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री के लालजीश्री (आचार्यश्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री) का जन्म हुआ और त्यागी-गृही सभी लोग इस समाचार से आनंद हो उठे और संप्रदाय के कोने कोने तक यह समाचार पहोंचाया गया।

आचार्यश्री के उत्सव को मनाना वह एक परंपरा है। ऐसे समय पर सभी देव संत हरिभक्तो की रसोई तैयार होती थी। संत एवम् हरिभक्त बाल लालजीश्री की दीर्धायु और निरोगी स्वास्थ्य की कामना करते हुए श्रीजी महाराज का विशेष भजन करते थे। यही समज हमारी परंपरा है।

लालजी महाराजश्री (आचार्यश्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री) के पादुर्भाव के समाचार उतर प्रदेश से अहमदाबाद आये और अहमदाबाद से मूली तह पहोंचाये उसकी प्रतिती इस पत्र से होती है।

यह बात ध्यान देने लायक है की एसे शुभ अवसर पर श्री आचार्य महाराजश्री धर्म प्रचार के लीए धोलका पधारे थे। धर्मवंशी आचार्यने तो इस संप्रदाय को ही अपना परिवार माना है। और उनकी यह अडग कर्तव्य भावना ही सत्संग के प्रति उनकी आत्मबुद्धिकी सुचक है।

संत हरिभक्तो के दर्शनके लिये यह पत्र म्यजियम में दर्शन के लिये रखा गया है। आज से करीब १४७ वर्ष पहले यह पत्र उसके मूल स्वरुप में ही हमे उसके दर्शन होते है वही हमारा भाग्य है।

- प्रो. हितेन्द्रभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-दिसम्बर-१७

रु. १,११,१११/-	महेन्द्रभाई रावजीभाई पटेल, ह. बकुलाबेन - उवारसद
रु. २५,०००/-	घनश्यामभाई परीख, ह. कुसुम और अनुष्कांत देवेन्द्रभाई परीख - अहमदाबाद
रु. १४,१८५/-	डॉ. लालजी हालाई - केनेडा
रु. १२,०००/-	जगदीशभाई कालीदास दरजी - सादरवाला - बोपल
रु. ११,५००/-	अनिलभाई नारायणभाजीभाई जोषी - अहमदाबाद
रु. ११,०००/-	शारदाबेन विशाभाई पटेल, ह. घनश्याम और महेशभाई - डांगरवा
रु. ११,०००/-	अ.नि. जटागौरी जगमोहनदास पारेख, ह. शैलेष और उमंग पारेख - मुंबई
रु. ५,५५५/-	गोहिल निलाबहन मधुभा - भरुच
रु. ५,००१/-	नर्मदाबेन वजुभाई बुटीया - कालीयाणावाला - नारणपुरा
रु. ५,०००/-	कौशल नितीनकुमार शाह - अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	करशनभाई जी. काठीया - सायन्ससीटी अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	नधितथा उर्जित त्रिवेदी राजीपा अर्थे - अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल
रु. ५,०००/-	मुकेशभाई रमणभाई पटेल - साबरमती

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि दिसम्बर-२०१७

दि. ०३-१२-२०१७	अमितभाई घीया - हैद्राबाद
दि. ०५-१२-२०१७	अ.नि. घनश्यामभाई डाह्याभाई पटेल, ह. हेमेन्द्रभाई और भावेशभाई - कुबडथल
दि. १०-१२-२०१७	जीग्नेशभाई भाईलालभाई ठक्कर - कांकरीया
दि. १२-१२-२०१७	राजबहादुर रमणलाल भावसाल - नवा वाडज
दि. १३-१२-२०१७	जयमीन नंदलाल पंचाल, ह. लताबेन नंदलालभाई - नवा वाडज - अभी केनेडा
दि. १७-१२-२०१७	हिंमत कल्याण हालाई - लंडन
दि. १८-१२-२०१७	मनोज केशरा वालजी जेसाणी - बलदिया
दि. २३-१२-२०१७	(सुबह) अनिलभाई मनजीभाई पटेल - भरुच
	(दूपहर) मालविका जयंतिलाल हालाई और मीनाबेन हालाई - मेघपर
दि. २४-१२-२०१७	अ.नि. दुष्यंतभाई वाडीलाल ठक्कर - अहमदाबाद (१० वी वार्षीक पुण्यतिथि के अवसर पर)
दि. ३०-१२-२०१७	निल और हरी और सहज ओस्ट्रेलीया, ह. प्राणजीवनभाई पटेल - देवपुरवाला
दि. ३१-१२-२०१७	अ.नि. कंचनबेन किशनलाल काछीया परिवार - लुणावाडा

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सौ बात की एक बात

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

प्रिय मित्र ! आइये, यहा बेठे आज हम भगवान श्री स्वामिनारायण ने उत्तर गुजरात के सादरा गाँव में जो अद्‌भूत उपदेश दिया था उसका आस्वाद ले ।

बात यहा है की, एक दिन भगवान सादरा आये । सादरा में एक भक्तने श्रीजी महाराज को अपने घर ठहर जाने की बिनती की । भक्त का घर छोटा देखकर भगवानने कहा कि ''अगर हम आपके घर पर रात्रि को अगर रुक जायेगें तो आपको बहुत तकलीफ होगी, कष्ट होगा । हमें चौराहे में कीसी का डर नहीं और हम रात्रि को चौराहे में ही ठहर जायेगें और वही सो जायेंगे । थाल ग्रहण करके भगवानने चौराहे की बैठक पर अपना स्थान लीया । यह भक्त अपने घर से शय्या का सामान लाये लेकीन श्रीजी महाराज तो उसी बैठक पर सो जाने के लीये तैयार थे ।

कीसीभी कार्य करना हो तो उसके पीछे तप करतना पडता है तभी वो कार्य संपन्न होता है । वह कार्य एसे ही नहीं हो जाता । आज हम हमारी स्थिती को देखते हैं तो हम सब लोग अच्छी जगह पर बेठ कर परमात्मा की चरित्रो को सुनते है या फिर संकिर्तन करते हैं । लेकिन यह जगह पर पहले इष्टदेवने कितना तप किया है वह हमारे उपदेश के लीये है । भगवानने देखा की भक्त का घर छोटा है और सभी पार्षदो को मिलाकर हमारी संख्या ज्यादा है तो इन सबको साथ में रखकर घर में सो जाना संभव नही था इसीलिये भगवान चौराहे पर जाकर सो गये ।

वहाँ आसपास के सभी लोगो को यह पत्ता चला की गाँव के चौराहे पर कोई आया है । लडके कहने लगे की कोई आया है और उनके साथ चार घुडसवार भी है तो कुछ लोग गभरा गये और वह सोचने लगे की यह घुडसवार कीसी लुट के लीये आये होंगे या फीर कहीं पर जगडा होने वाला होगा ! तो कोई यह बात लेकर आया की यह तो स्वामिनारायण भगवान है और फिर तुरंत ही चौराहे पर एक बड़ी सभा आयोजीत की गई । सभी लोग नीचे बैठ गये और श्रीजी महाराज उच्च स्थान पर बिराजमान हुये ।

प्रभुने उस समय सादरा के सभी निवासीओ को उपदेश दिया, ''आप सभी लोग धार्मिक हो, मुमुक्षु को । इश्वरने आपको यह मनुष्य अवतार दीया इसका विचार कीया है ! हे भक्त मनुष्य और पशु में क्या फर्क है ? मनुष्य अन्न ग्रहण करता है वैसे ही पशुभी अन्न ग्रहण करते है । मनुष्य अपने परिवार निर्वहन करता है तो पशु भी अपने बच्चों का निर्वहन करते हैं । मनुष्य सोता है पशुभी सोते है, मनुष्य के मन मे भय है तो पशु के मन में भी है और मनुष्य ओर पशु दोनो में प्रित (स्नेह) दिखाई देती है । तो फिर मनुष्य और पशु में क्या फर्क है ? पशु भगवान का भजन नहीं कर सकते । वे सतकर्म भी नहीं कर सकते जब की मनुष्य जब भी चाहे धर्म का पालन करके भगवान की भक्ति करत सकता है । और इसी बात से मनुष्य पशु से भिन हैं । अगर भक्ति नहीं है तो एसे मनुष्य और पशु में कोई भेद नही रहता ।''

स्वामिनारायण भगवान से यह उपदेश श्रवण

करने के बाद सादरा के वे निवासी लोग बोलने लगे की भगवान श्री स्वामिनारायण की यह बात तो बीलकुल सच्ची लगती है। आज हम केवल खाना खाये या फीर अपने परिवार का निरवहन करे तो फिर हमारे अंदर मानव बुद्धि की कोनसी विशेषता रहती है ? तभी गाँव के एक भूदेव गोर महाराजने कहा की जो बात भगवान स्वामिनारायणने कही है ऐसी एक बात मुजे भी पता है।

तुलसी हरिकी भक्ति बिना,
धिक दाढी धिक मूछ।

देखीये मुजे पता है ना ? हा भूदेव ! आप सही हो। जैसे की तुलसीदासजी कहते हैं भगवाने वह मटीरीयल लीया और ईश्वर की ईच्छा थी की वे उसको एक सबसे बड़ा लंबकर्ण बनाये लेकीन शायद भगवान कोई जल्दी में होंगे या फीर गलती से चार पैर की जगह दो पैर बना दीये। गलती हो गई और पुंछ लगाने की जगह मूंछ लगा दी और इसी जल्दी और लगती से इश्वरने पशु की जगह मनुष्य बना दीया। लेकीन तुलसीदासजी कहते हैं की हय सब कीसके लीये ? तो जिसके जीवन में यदी भक्ति-सत्संग इत्यादी नहीं है तो उसकी मनुष्यता को धिक्कार है।

सादरा में यह उपदेश सुनकर जो मुमुक्षु थे उनके भाग्य खुल गये और भगवान स्वामिनारायण के दर्शन हुये और उनके मुख से उपदेश सुनने को मिला।

मित्रो ! आपने यह उपदेश सुना ! कितनी अच्छी बात है। इसी लिये ही संतोने कहा है कि

''मिला मनुष्य देह चिंतामणी रे.....''

इस अमूल्य मनुष्य देह से भक्ति सत्संग करना न भूले यह ध्यान रखना है। सौ बात की एक बात हमें भगवान की भक्ति करनी है।

●

ईर्षालु को अधीक तकलीफ

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भगवानने बहुत कृपा करके हमे यह मनुष्य देह दीया है इस धरती पर बहुत सारे जीव सृष्टि है लेकिन विचार शक्ति वाचा, हास्य एसी अमुल्य भेट केवल मनुष्य देह को ही दी है। अगर इसका सुचारु रुप से परोपकार और भजन भक्ति के लीये उपयोग कीया जाय तो बहुत अच्छा काम हो जाये लेकिन सबसे बडी मुश्कील यह है की व्यक्ति इर्ष्या की वजह से अपना कर्तव्य भुल जाते है। और उसे अपने ही की गई गलतीयो को फल भुगतना पडता है।

यह छोटी लेकीन बहुत जरुरी बात हमे एसी गलतीयो से हमको बचाने के लीये मददरुप होगी। एक बडा गाँव था और गाँव में तो सभी तरह के लोग होते हैं। कोई व्यापार करता हो तो कोई पढाता हो, कोई कपडो की सिलाई करता हो, कोई मजुरी करता हो या फीर कोई नोकरी करता हो इत्यादि बहुत सारे प्रकारे के व्यवसाय से जुडे हुए अलग-अलग व्यक्तिओ की वस्तीवाला वह गाम था। इस गाँव में एक कठियारा रहता था वह दूर दूर के जंगल से लकडीया काट कर शहर में बेचकर अपना गुजारा चलाता था। कठियारा भगवान ने दी हुई इस जींदगी को बड़ी खुशी से महेनत के साथ जी रहा था।

इस कठियारे को अपने शिर पर एक लहुकी गाठ हो गई। गाँव के वैद्य दाक्टर इत्यादि को दिखाया। और दवाइया भी ली लेकिन इस गाठ का कोई उपचार नहीं हुआ। एक दीन की बात है वह कठियारा लगडीयाँ लेते हुए जंगल में बहुत दूर नीकल गया। साम हो गई तभी कठियाराना यह विचार कीया की अब घर की और वापस जंगल में से नीकलना बहुत खतरनाक होगा। सामने लुटेरे मीले या फीर जंगली पशु दोनो से अपने

जान को खतरा है इसीलिये वह जंगल में नदी के पास एक छोटी सी गुफामें बैठा रहा था।

आदी रात तो एसे ही पसार हो गई तब गुफा की बहार की और कीसी वाजींत्र की आवाज सुनने लगी उसको आश्चर्य हुआ इस समय पर यहाँ वाजींत्र कौन बजा रहा होगा ? आश्चर्य चकित होकत उसने बहार आकर देखा तो नदी के पास बैठ कर सभी देवगण मीठाईया ले रहे थे और मीठाईया खाने के बाद वे सभी नृत्य करने लगे। कुछ देर तक तो कठियाराने बैठ कर सबकुछ देखा लेकीन बाद में उससे रहा नही गया।

एसा सुंदर संगीत बज रहा हो और देवगण भी नृत्य कर रहे हो तभी कौन बैठे रह सकता है ! हाथ में कुल्हाडी लेकर वह कठीयारा भी देवोके बीच जाकर उनके साथ नाचने लगा।

कठीयारा जीस तरह से हाथ में कुल्हाडी लेकर नाच रहा था वह देवो को खूब अच्छा लगा। कठीयारा के उपर प्रसन्न होकर उसे भी मीठाईया खाने को दी और उन सब में रात्री का समय हो गया । और सुबह होने के आयी । कठीयारा के नृत्य से प्रसन्न हुइ देवगणने इस कठियारा से कहा की ''तेरा यह नृत्य बहुत अच्छा लगा है, कल भी तुम यहाँ पर आ जाना और इसके लीये तुम अपनी कोई चीज यहाँ हमे देकर जाव अगर तुम वापस आये तो वह चीज तुम्हे वापस मीलेगी और अगर नही आया तो वह चीज तुम्हे वापस नही मीलेगी।

यह बीचारा कठीयारा..... ''क्या होगा उसके आपस ! तभी देवगण में उसके शीर पर की वह गाँठ देख ली और उनको यह चीज बहुत ही मुल्यवान लगी अपने चमत्कारीक हाथो से देवगणने वह गाठ नीकालली।

गाठ दूर हो जाने से कठीयारा का शिर और चहेरा बहुत ही सुंदर दिखने लगा। वह सुबह को अपने धर वापस आया, उसे देखकर उसके परिवार के लोग बहुत खुश हुए। इस कठीयारा पडोशी एक आदमी बहुत विचीत्र था । उसके मन में इर्ष्या थी संयोग से उसके शिर पर भी एसी गाठ थी उसने यह देखा की इस कठियारा के सार से गाठ चली गई और मे अभी अभी इसकी वजहसे खराब दीख रहा हूँ। एसा कैसे चलेगा। फिर तो वह कठीयारा के पास आकर बाते करने लगा और बातो बातो में ही उसने इस भोले कठीयाराके पास से अगली रात्री की सारी बाते जान ली । कठीयारा तो अपने काममें व्यस्त हो गया लेगीन वह ईर्ष्यालु पडोशी उस स्थान पर जाकर गुफा में बैठकर राह देखने लगा आधी रात को देवगण आये लेकीन आज कोई उत्सव मनाया नही जा रहा था और इसीलीये आज कोई नृत्य का कोई कार्यक्रम भी नहीं था लेकिन वह कुल्हाडीवाले आदमी को देखकर देवगण कहने लगे यह आदमी कीतना प्रामाणीक है, जैसे उसने कहा था वैसे वह आ गया तो हमे उसे उसकी वस्तु वापस देनी चाहीए।

ऐसा सोचकर देवगण ने उस आदमी के शिर पर वह गाठ वापस चिपकादी। उस आदमी के शिर पर पहले से ही एक गाठ थी अब दूसरी गाठ भी आ गई। शिर पर यह दो गाठ की वजह से वह बड़ा कदरुपा दीखने लगा। उसे अपने कीया पर पस्तावा होने लगा और वह बहुत दुःखी हो गया।

मित्रो ! आपने देखा की ईर्ष्या सुखी जीवन को इस तरह से दुःखी बना देती है। जीसे कोई ईर्ष्या नही थी एसे कठीयारा अनायास ही अपनी गाठ से मुक्ति मिल गई और इस ईर्ष्या वाले व्यक्ति को दूसरी गाठ मिली । इसीलीये हमे यह बात याद रखनी है की जो व्यक्ति दूसरो की ईर्ष्या करता है उसे दुगना दुःख मिलता है।

इसीलिये भगवान श्री स्वामिनारायणने हमे यह उपदेश दीया है की एक-दूसरो की ईर्ष्या कभी नहीं करनी है। जीस ईर्ष्या की वजह से भगवान के भक्त का द्रोह हो एसी ईर्ष्या का सर्व प्रकार से त्याग करना चाहीए।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "इस जगत को जीसने बनाया उसने अपने जीवन की डोर सोप कर देखे"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

सुख और आनंद सभी व्यक्ति को चाहिए और वह दो जगह पर है । यह जगत में भी और भगवान के पास भी है लेकीन इन दोनो में फर्क है तो फीर कैसा फर्क है । यह फर्क प्रकाश और अंधकार के बीच जीतना फर्क है उनता फर्क है । भगवान के पास जो सुख और आनंद है वह प्रकाश स्वरुप है और इस जगत के पास जो सुख और आनंद है वह अंधकार के समान है । गाडी, बंगला, नौकर, चाकर, सोना, झवेरात इन सारी बातो में यह जगत बहुत सुखी है । लेकीन वह बहार से चमकाये हुये सोने के गहने के जैसा है । हम जानते है की सोने के गहने दो तरह के होते है एक सच्चे सोने से बने हुये और दूसरे पोलीस से चमकाये गये गहने तो जैसे पोलीस से चमकाये हुए गहने की चमकाहट कुछ दीनो में दूर हो जाती है तब उसकी सच्चाई बहार दीखने लगती है । वैसे ही इस जगत का सुख जब चला जाता है तब हमे यह पता चल जाता है की यह जगत दु:ख देकर जाता है और हमे यह भी पता चल जाता है की यह सुख गलत है । भगवान का सुख ही सच्चे सोने जैसा है । वह शास्वत है तो जगत के इस सुख का जो भ्रम है उसे हमे दूर करना है । महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन और दुर्योधन भगवान के पास मदद लेने के लीये गये तब भगवानने कहा की एक ओर मेरी नारायणी सेना है ओर दूसरी ओर में अकेला नीहथ्था रहुंगा । भगवान अपनी सेना को दो भाग में बांट सकते थे और अर्जुन और दुर्योधन को अपनी आधी-आधी सेना दे सकते थे लेकिन भगवानने एसा नहीं कीया । तभी दुर्योधनने भगवान से सेना मांग ली (अर्थात उसने जगत का सुख मांगा) और अर्जुन को यह पता था की परमात्मा मेरे साथ है । और जब परमात्मा साथ हो वहाँ विजय निश्चित होती है (अर्थात भगवान का सुख मांगा) हम को सुनने में यह लगे की अर्जुनने भगवान को अपने रथ का 'सारथी' बनाया लेकीन सारथी का अर्थ यह नही । **सारथी का अर्थ के सब कुछ सोंप देना ओर भगवान की जीस दीशा में ले जाये उसी दीशा में जाना । भगवानने जीस दीशा में रथ चलाया, जी दीशा में ले गये और जीस तरह से ज्ञान दीया वैसे भगवान के कहने मुताबीक अर्जुनने युद्ध कीया और वह विजयी हुआ ।** हमे भी भगवान को अपने जीवन की डोर सोंप देनी है अगर भगवान के हाथ में हमारे जीवन को डोर होगी तो हम कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जायेंगे । **जीसने इस विश्व का निर्माण किया है उसे अपने जीवन की डोर सोंप कर देखो ।**

मछुवारा जब समुद्र या सरोवर में अपनी जाल डालता है तब जो मछली मछुवारे के पैर के पास होती है वह बच जाती है । तो हमे भी केवल भगवान की शरणागती स्वीकारनी और अर्जुनकी तरह सखा भक्ति रखनी है । अगर भगवान के साथ हम सखा भक्ती रखेंगे तब हमारा मन प्रफुल्लीत हो जाता है । **भगवान से हमे डरना नहीं है । भगवान के पास हमे सब कुछ बता देना है क्योंकि भगवान सब कुछ जानते है और जहाँ भय है वहाँ प्रेम नहीं होता, भगवान के सिवा कही पर भी सच्चा प्रेम कही नहीं पूरे ब्रह्मांड में**

जैसे जैसे स्वार्थ पुरा होता है वैसे वैसा सभी जगह से प्रेम समाप्त हो जाता है। परमात्मा की कृपा तो सदा हमारे पर है ही लेकीन हम उसे ले नही सकते उसमें किसकी गलती है ? उदाहरण के तोर पर बहार तो प्रकाश है ही लेकीन हम अपने अंदर जाकर खीडकी दरवाजा बंद करके और पर्दा बंद करके बैठ जाये तो गलती तो हमारी ही है । हम खुद ही अपने उपर एक **'आवरण'** तो यह आवरण कीसकी वजह से आ जाता है ? यह अज्ञान की वजह से आता है और अज्ञान रुपी की वजह से हमारे अंदर दोष आ जाते है। तो जब हमारे अंदर दोष आ जाते है उसकी वजह से हमे पता होने पर भी एक भ्रांती हो जाती है । **यह भ्रांती यानी जो वस्तु जैसे हे उससे विपरीत उसे समजना और सबसे बडी भ्रांती यह है की हम अपने शरीर को ही मै यह शरीर हूं वैसा मान लेते हैं और यह जो मान्यता है वही भ्रांती है।**

और दूसरा दोष है प्रमाद । प्रमाद यानी की **'मनकी असावधानी'** । कभी कभी हमे पता होने पर भी असावधानी हो जाती है जीसे 'प्रमाद' कहते है और अपने अंदर जो दोष है उसे छुपाने का अहंकार रहता है की मैं जो कुछ भी करता हुं वही सच्च है । एसा बुद्धि का अहंकार रहेता है और जब कोई रोके तो भी उसे कैसे स्वीकार कीया जाए । तो अपने दोष को छुपाने के लीये वह तरह तरह की वजह तैयार रखता है और सभी चीजो में हम अनुभवी न होने पर भी अपने आपको अनुभवी समझते है । **'संपूर्ण पूर्णता कीसी में नहीं है ।'** सब विषयो की जानकारी हमको हो एसी शक्यता ही नहीं है। डॉकटर को अधीवक्ता का ज्ञान नहीं होता फिर भी प्रत्येक कार्य में ८०% लोग सहाल देने लग जाते हैं । बहुत कम लोग होते है जो स्पष्ट कह देते हैं कि मुजे इस वात का ज्ञान नहीं है क्योंकि सभी माया के आधीन है किसी में उसका स्थर ज्याद है तो किसी में उसका स्तर कम है। **"एक भगवान ही सर्वज्ञ हे, जो सब कुछ जानते है।"**

धुतराष्ट्रने भगवान को पुछा, ''मेरे १०० लडके की मृत्यु हो गई और में अंधहो गया'' तभी श्रीकृष्ण भगवानने कहा, **"आपके सभी जन्म मुजे याद है। इतने सारे जन्मो में आपने क्या कीया वह भी मुझे याद है ।"** तो हमने पहले कीये हुये दुराचार, अधर्म, अनीति सारे कार्य जमा होते है जीसे संचीत कर्म कहते है उस मुताबीक हमे उस फल हमे भुगतने पडते है लेकीन हमको एसे दयालु भगवान मीले है की हमारे संचीत कर्मो को भी माफ कीया जाता है। हम इस जगत में देखते है की किसी भी व्यक्ती से गलती हो जाये उदाहरण के तोर पर किसी की हत्या कर दी तो आखीर में न्यायाधीश तो उस मनुष्य को मृत्यु दंड की सजा सुनाता है और उस अपराधकी सजा बदली नही जा सकती है । और उस व्यक्ति को वो जसा भुगतनी पडती है। तो भगवान जो इस पूरे विश्व को चलाता है वह किती दयालु है की हमारे संचीत कर्मो को बदल देता है और उसे माफ कर देता है। **"तो हमे क्या मिला है उसका मुल्य हमे समजना हा" और यह ध्यान रखना है की जान बुजकर कीये गये खराब कर्मो को बदला नही जा सकता है इसलीये कोई भी कार्य जानबुजकर खराब नहीं करना है।**

•

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धनुर्मास धून महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और कालुपुर मंदिर के पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के परम पवित्र सानिध्य मे दि. १६-१२-२०१७ से दि. १४-१-२०१८ तक पवित्र धनुर्मासमें हर साल की तरह इस साल प्रात:काल ६-०० से ६-४५ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून में हजारो संत-हरिभक्तो ने महा अलौकिक लाभ लीया। सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायण नाम की धून की गई थी जिस में तीन हजार मासीक धून हुई थी और पांच हजार से अधीक दैनिक धून हुई थी।

सुंदर एवम् अलौकिक भेट भी दी गई थी। पू. महंत स्वामी के मंडल के संतो में ब्रह्मचारी पू. स्वामी राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे. के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत मंडल एवम् हरिभक्तोने भी सुंदर सेवा की थी। सभा मंडप को रोसनी से सजाया गया था। हजारो भाविक भक्तोने श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल के दर्शन करके महामंत्र धून का लाभ लेकर अपना जीवन कृतार्थ कीया था। (कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से और अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन के मुताबीक बापुनगर के प.भ. दिनेशभाई की और से दि. ३१-१२-२०१७ और रविवार को सुबह ७-०० बजे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में शाकोत्सव का सुंदर आयोजन संपन्न हुआ। जीस में करीब तीन हजारो भावीक भक्तोने देव दर्शन और धून का लाभ लेकर शाकोत्सव मनाया और धन्य हुए थे। नारायणघाट मंदिर और बापुनगर मंदिर से बहुत सारे हरिभक्तोने पदयात्रा के द्वारा श्री नरनारायणदेव के दर्शन करके शाकोत्सवका प्रसाद लिया था। इस पुरे अवसर के दौरान कोठारी जे.के. स्वामी और शा. मुनि स्वामी के मार्गदर्शन से स्वयं सेवकोने सुंदर सेवा की थी। (कोठारी शा. मुनि स्वामी)

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी कलोल

भगवान श्री स्वामिनारायण के चरण कमल से पावन हुइ उत्तर गुजरात की अलबेली नगरी कलोल में एन.आर.आई. ओर शांतिप्रिय लोग स्थायी होते ही पीछले दशे साल में बडी संख्या में पंचवटी कलोल में नये अद्यतन घर बनने लगे।

कलोल में हरिमंदिर होने के बावजुद पंचवटी विस्तार में कोई मंदिर न होने से मूल संप्रदाय के हरिभक्त मंदिर से वंचित रहते थे। ऐसे में अहमदाबाद से श्री नरनारायणदेव की गादी के वर्तमान आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने जेतलपुर मंदिर के महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के संत मंडलने नूतन शीखरबधमंदिर निर्माण करने की आज्ञा ई.स. २०११ में दी थी। शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ने कलोल पंचवटी में रहते बड़े उत्साही और सेवा भावी हरिभक्तो में पटेल प्रविणभाई शंकरभाई (मोखासणवाला) और जगदीशभाई चीमनभाई पटेल (ओलावाला) की आगेवानी में पंचवटी पार्टी प्लोट के स्थान का चयन कीया और श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मंदिर की सहायता से ३७०० वर्गवार जमीन खरीद ली।

उसके बाद जमीन से जुडी हुई कुछ वैधानीक दुविधाओ का उकेल उस समय के माननीय श्री शहरी विकास मंत्री श्री नीतीनभाई पटेल की सहायता से प्राप्त कीया गया।

ई.स. २०१२ के जून महिने में प.पू. मोटा महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हस्ते से भूमि पूजन विधिवत से संपन्न हुआ। कलोल में बस रहे सेवा भावी उदार दाता हरिभक्तो के तन, मन और धन के सहयोग से बंसीपहाडपुर के पथ्थर से पांच शिखर वाले मंदिर का निर्माण कार्य तेज गती से शुरु हुआ। जैसे जैसे दानवीरो की दान से सर्वांनी चलती रही वैसे वैसे मंदिर का निर्माण कार्य आकाश की और उपर गती करने लगा। श्री नरनारायणदेव के गादी के निष्ठावान हरिभक्तो के उत्साह में दिन प्रतिदिन बढतरी होने लगी क्योकिं अपने इष्टदेव के वचन के अनुसार मंदिर की व्यवस्था मिले उस में ज्यादा से ज्यादा भक्तों की सेवा मिले एसी भावना के साथ मंदिर में उत्सव और बड़े बड़े आयोजन होने लगे। इसकी अलावा प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४२ वाँ जन्मोत्सव भी पंचवटी कलोल के आयोजन से बड़े उत्साह से मनाया गया।

मंदिर निर्माण की गती और तेज हुई और एसे में निर्माण की आयोजन समिती के कोठारी श्री प्रविणभाई शंकरभाई पटेल आकस्मिक श्रीहरि की अखंड सेवा में अक्षरवासी हुए और कलोल के समग्र सत्संग में शोक फेल गया । जिससे यह निर्माण कार्य की गती कुछ समय के रुक गई । हमारे बड़े भाई प्रविणभाई के अक्षरवास के बाद पू. पी.पी. स्वामीने मंदिर के कोठारी की सेवा हमे सुप्रत की हम सत्संग के व्यवहार से परीचित न होते हुए भी संतो के मार्गदर्शन और श्रीजी महाराज की कृपा से हमारे उत्साह में दिन प्रतिदिन बढोतरी होती गइ । इ.स. २०१७ याने की केवल पांच या छ वर्ष के समय में मंदिर का निर्माण कार्य पूर्णताकी और आ गया । मंदिर के साथ जुडी हुई अन्य सुविधाए जैसे की सभा मंडप, भोजनालय, कार्यालय, संतो के आवास जैसी तमाम सुविधा से संपन्न भक्ति खंडा का निर्माण कार्य भी केवल ६ महिने में संपन्न हुआ ।

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

दि. २१-११-२०१७ से दि. २७-११-२०१७

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का मुहूर्त चयन करने की आज्ञा प.पू.ध.धु. १००८आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने दी और उसके साथ साथ महोत्सव के दाताओका भी चयन कीया गया । भगवान की प्राणप्रतिष्ठा के महोत्सव के अवसर पर जेतलपुर मंदिर के संत मंडल से हेत रुची वाले हरिभक्तो का प्रेरणा चयन कीया गया ।

उत्सव का आयोजन मंदिर से नजदीक गोपालनगर के १८ वीधा मेदान में कीया गया । ४४० - १०० के विशाल कथा मंडप, १५० - १५० को भोजन मंडप, अखंड धून मंडप और प्रदर्शन के लीये आकर्षक गुफा में १२ ज्योतीर्लींग के दर्शन रखे गये थे । और ७ दिन की स्वामिनारायण महा मंत्र की अखंड धून का भी हरिभक्तोने बहुत लाभ उठाया था ।

मूर्ति प्रतिष्ठा के अंगभूत पंचदिनात्मक महाविष्णुयाग में मंदिर निर्माण कार्य के मुख्य दाता यजमान रहकर प्राण प्रतिष्ठा की विधिमंडप पूजन, जलयात्रा, धान्यावास, धृतावास, स्थापन, शयन विधि, कलश पूजा, धजा पूजा, नगर दर्शन इत्यादि शास्त्रोक्त पुराणौक्त विधिशास्त्री जीज्ञेशभाई जानी के आचार्य पद से की गई।

महोत्सव में विशेष महत्व यह बात का था की जो भी व्यक्ति धर्मारण्यनगर में आये उसे किसी प्रकार की भेदभाव और पहचान के बीना सबको भोजन दीया जाता था । सात दिन में करीब २ लाख से ज्यादा लोगोने प्रसाद लीया । महेसाणा के प.भ. पोपटलाल पटेल के नेतृत्व में कलोल के युवा और महिला स्वयं सेवकोने आग्रह करके सभी को भोजन दीया क्योंकी भोजनालय का नाम गंगामा अन्नक्षेत्र रखा गया था ।

विशाल कथा मंडप में करीब १५ हजार लोगो की बेठक व्यस्था वाले मंडप में प्रत्येक हरिभक्तो को खुरसी में बैठने की सुविधा दी गई थी संत और सांख्ययोगी महिलाओ की संख्या महोत्सव की शोभा में अभिवृद्धी कर रही थी । कलोल नगर के श्रेष्ठी, उद्योगपती समाज के महेमान विशेष उपस्थित रहे । महिला हरिभक्तो दर्शन देने के लीये प.पू.अ.सौ. मोटा गादीवालाश्री पांच दिन तक नित्य कथा में पधारते थे । और उनकी पसंदगी के कीर्तन गाने का संदेशा भी भेजते थे ।

बहुत सारी जगह से संत भी प्रतिदिन आते थे और मंदिर का आयोजन और आयोजको की सेवा की प्रशंसा करते थे ।

दि. २६-११-२०१७ के दिन भावि आचार्य प.पू. श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे और मंदिर और महोत्सव में दान देने वाले दाताओ का अपने करकमलो से आशीर्वाद स्मृतिचिन्ह भेट में दिया था । उन्होने आशीर्वचन देते हुए कहा की कलोल का उत्सव छपिया के महोत्सव की स्मृति करा रहा है । एसा लगता है की मानव छपिया के उत्सव में ही आये है ।

कथा के वक्ता शास्त्री पी.पी. स्वामीने अपनी निराली शैली में कथामृत का सुंदर रसपान करवाया था, समयपर कथा और समय पर सभी आयोजन में श्रोताओ के उत्साह में दिव्यता के दर्शन होते थे । दि. २६ नवम्बर के रोज भगवान की नगरयात्रा में पहले कभी न देखी गई एसी जनसंख्या मौजुद थी भक्तो का उत्साह भी इतना था की अपने नृत्य से भगवान को राजी करने में तलीन वे सबकुछ भुल गये थे ।

रात्रि के ८ बजे भुज मंदिर के पू. महंत स्वामी पुराणी धर्मनंदनदासजी, पार्षद श्री जादवजी भगत, जेतलपुर के महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, छपिया के महंत ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी, मथुरा के महंत शास्त्री स्वामी अखिलेश्वरदासजी इत्यादि संत और दाताओ के वरद हस्तो से मंदिर उद्घाटन की विधिरखी गइ । इस में छोटे बच्चो का नृत्य, आतशबाजी, लाईट शो जैसे आकर्षक कार्यक्रम देखकर सभी भक्त मंत्रमूग्धबन गये थे और मंदिर की समूह आरती का लाभ उठाया था ।

दि. २७ नवम्बर की सुबह प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हस्त से मध्य मंदिर में परम कृपालु श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज, श्री नरनारायणदेव, सुखशैय्या, पंचमुखी हनुमानजी और सिध्धिविनायक देव की शास्त्रोक्त विधी के साथ मूर्ति प्रतिष्ठा विधिन्यास करके पंचामृत के द्वारा मूर्तिओका महाभिषेक विधिवत रुप से संपन्न हुआ ।

सभा में धर्मकुल पूजन, संत पूजन, सन्मान विधिऔर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने संत हरिभक्तो और दाताओ को आशीर्वचन दीये थे ।

पंचवटी मंदिर श्री नरनारायणदेव गादी का है। जमीन का खर्च कालुपुर मंदिर की और से कीया गया और निर्माण कार्य और महोत्सव दाताओ के दान से हुआ। निर्माण कार्य का समय ६ वर्ष था उस में करीब ७ करोड रुपये का खर्च हुआ। बंसीपहाडपुर और जोधपुर के पथ्थरो से १०८ स्थंभ, पांच शिखर, विशाल घुम्मट से सुशोभित ८१ फूट की उंचाई पर धजा फरकती है। मध्य मंदिर में बिराजमान श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज की मूर्तिया पंचधातु से बनायी गई है। महोत्सव के आयोजन में हमारे मंडल के संतो में सभासंचालक शास्त्री भक्तिनंदनदासजी आयोजक महंत के.पी. स्वामी, स्वामी नारायणप्रसाददासजी (महेसाणा), शा. देवस्वरुपदासजी (जयपुर), शा. सच्चिदानंददास (कलोल), भानु स्वामी (मूली), हरिप्रकाशदासजी (मकनसर), के.पी. स्वामी ब्रह्मचारी (छपिया), हरिस्वरुपानंदजी ब्रह्मचारी (छपिया), ब्रह्मचारी पवित्रानंदजी (छपिया), सर्वेश्वर स्वामी (मधुरा) इत्यादि संतोने बडा कठीन परीश्रम कीया था। (महंत स्वामी विश्वप्रकादासजी, कोठारी घनश्यामभाई शंकरभाई पटेल)

गांधीनगर सेकटर-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर में अमृतवर्षा महोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से गांधीनगर सेकटर-२३ के हमारे स्वामिनारायण मंदिर में दि. २१-१२-२०१७ से दि. २५-१२-२०१७ तक अमृतवर्षा महोत्सव का आयोजन बड़ी दिव्यता से किया गया जिसके अंतर्गत देखने लायक और जानने लायक ''अमृतवर्षा प्रदर्शनम्'' का उद्घाटन दि. २७-१२-२०१७ और रविवार को हुआ था। भारतीय संस्कृति के विविधधार्मिक स्थान को ५६०० वर्गफिट के भारत के नकशे पर दिखाया गया था और भक्तो के द्वारा तैयार की गई विविधकलाकृतिओ का भी तादृश दर्शन करके सबने धन्यता का अनुभव किया था। करीब ५० हजार धर्मप्रेमी जनता ने इस प्रदर्शन को देखा था।

दि. २१-१२-२०१७ गुरुवार की सुबह अमृतवर्षा महोत्सव का उद्घाटन समारोह और ठाकोरजी की शोभायात्रा बड़ी दिव्य और कल्याणकारी थी। पांच दिन के इस समारोह में कथा-वार्ता, सत्संग सभा और इसके अलावा बिना मुल्य के बी.एम.डी. निदान केम्प (निदान जरुरी सलाह और बिना मूल्य की दवा), श्रीहरि पूजन, मारुति याग, महानैवेद्य, अमृततुला विधा, सत्संग गौष्ठी, अमृतवर्षा नगर यात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, महाअभिषेक, महानिराजन, आशीर्वाद की अमृत वर्षा, शाकोत्सव, महिलाओका सत्संग और सदभावन लक्षी कार्यक्रम इत्यादि अनेक विधिप्रेरणादायी और मोक्षदायि कार्यक्रम हुए थे।

दि. २५-१२-२०१७ सोमवार को सुबह ९-०० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे। पू. महाराजश्रीने समग्र सत्संग समाज को आशीर्वाद दीये थे और शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी की दीक्षा को ६० वर्ष पूर्ण होते थे इसलीये उनके द्वारा की गई सत्संग की सेवा को सराहा और उनके द्वारा एसी सेवा होती रहे एसे शुभाशीर्वाद भी दीये। इस अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से शास्त्री स्वामी से लीखी गयी दो नयी पुस्तक ''हरिबल गीता कथा विवेचन'' और ''नारायण गीता'' का विमोचन कीया गया था।

इस अवसर पर काफी जगह से बडी संख्या में संत और देश विदेश से हजारो हरिभक्त पधारे थे। अमृतवर्षा महोत्सव में प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन और आशीर्वाद से सर्वत्र स्वामिनारायण भगवान और नरनारायणदेवका जयजय कार हुआ। (नारायण वी. जानी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में शाकोत्सव

परब्रह्म परमात्मा इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और आशीर्वाद से और जेतलपुर धाम के महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से और मार्गदर्शन से एवम् महेसाणा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी उत्तमप्रियदासजी और महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी की आयोजन से यहा पर श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में दि. २४-१२-२०१७ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

बहुत सारे स्थान से पधारे संतो की सुंदर उपस्थिति में मंदिर के विशाल प्रांगण में सर्व प्रथम युवक मंडल के द्वारा कीर्तन-भक्ति और धुन किये गये थे इसके बाद संतो के आशीर्वचन और अंत में संतो के वरद् हस्त से अलौकिक शाक का बघार हुआ था। महेसाणा और उसके आस-पास के हजारो हरिभक्तों ने इस दिव्य शाकोत्सव का लाभ लेकर धन्य हुए थे। समग्र अवसर के दौरान महिला हरिभक्तोने रोटला बनाने की सेवा की थी। और स्वयं सेवकोने प्रेरणात्मक सेवा की थी। (कोठारी हीतेन्द्रसिंह - महेसाणा)

ट्रेन्ट गाँव में शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और जेतलपुर धाम के वयोवृद्ध स.गु. स्वामी श्यामचरणदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट के द्वारा दि. २४-१२-२०१७ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुर से पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और पू. भक्तिवल्लभदासजी,

अंजली मंदिर से महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, शा. भक्तिनंदनदासजी इत्यादि संत मंडलने कथावार्ता के द्वारा भक्तो को राजी कीया था। सभी भक्तोने शाकोत्सव का प्रसाद लीया और बहुत राजी हुए थे। महिलाओने भी रोटला बनानी के सुंदर सेवा की थी । शाकोत्व के यजमान प.भ. पटेल कल्याणभाई (ट्रेन्ट) परिवार रहे थे।(कोठारीश्री ट्रेन्ट मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा में सत्संग सभा

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और जेतलपुर धाम के महंत शा. स्वामी की प्रेरणा से जेतलपुरधाम निवासी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के काशीन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर में रात्रि सत्संग सभा दि. २०-१०-२०१७ के रोज आयोजीत की गयी थी। जिस में अंजली मंदिर से शा. भक्तिनंदन स्वामी, भात मंदिर से स.गु. दास स्वामी और संत मंडलने कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिया था। युवक मंडलने कीर्तन भक्ति की थी। यहाँ पर युवक मंडल के द्वारा प्रति मास बारस के दिन मंदिर में सभा का आयोजन होता है जीस का लाभ गाँव के बहुत सारे लोग उठाते हे। अंत में ठाकोरजी का आरती थाल करके सभी को प्रसाद दीया गया था । अहमदाबाद में रहते काशीन्द्रा गाँव के भक्त प्रति मास वद बारस के दिन आयोजित हो रही इस सभा का लाभ लेने का विशेष अनुरोधहै ।(युवक मंडल - काशीन्द्रा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल में शाकोत्सव

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और जेतलपुर धाम के पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा और महंत के.पी. स्वामी और महंत वी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल में सर्व प्रथम दि. २५-१२-२०१७ के दिन शाकोत्सव का सुंदर आयोजन श्री स्वामिनारायण मंदिर के द्वारा किया गया था । इस अवसर पर अनेक स्थान से संत भी पधारे थे। सभा में कुहा गाँव के युवक मंडल ने सुंदर कीर्तन भक्ति से शुरुआत की थी। उसके बाद शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजीने कथा की थी उसके बाद पधारे हुए संतो में जेतलपुर के पु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, अहमदाबाद कालुपुर के पू. जगतप्रकाशदासजी, शा. स्वामी गुरुप्रसाददादासजी और आनंद स्वामी इत्यादि संतो ने आशीर्वाद दीये थे । अंत में पू. श्याम स्वामी, पू. शा. भक्तिवल्लभ स्वामी, महंतश्री के.पी. स्वामी और शाकोत्सव के यजमानश्री भरतभाई नटवरभाई पटेल, श्री भूपेन्द्रभाई नटवरभाई, श्री हर्षदभाई मूलजीभाई पटेल और श्री नविनभाई मूलजीभाई पटेल (कुबडथल परिवार)ने शाकोत्सव का बधार करके ठाकोरजी की आरती उतारी थी। सभी हरिभक्तोने दिव्य प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए थे।(कोठारीश्री नीलेशभाई पटेल कुबडथल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब का शाकोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और जेतलपुरधाम के महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा और अंजली मंदिर के महंत स.गु. विश्वप्रकाशदासजी स्वामी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब का ५५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव दि. ३०-११-२०१७ से दि. ४-१२-२०१७ तक बडी धामधुम से मनाया गया।

इस अवसर पर पंचदिनात्मक रात्रिय श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन कीया गया था जिस में नवयुवा शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजीने कथा का रसपान कराया था । प्रतिदिन विविधप्रकार के अन्नकूट महिला मंडल के द्वारा बनाकर ठाकोरजी को अर्पण किये जाते थे।

पाटोत्सव के दिन जेतलपुर के संत मंडल के द्वारा ठाकोरजी की महापूजा शोडशोपचार पूजन महाभिषेक किया गया था। इस अवसर के यजमान प.भ. अंबालाल हरिभाई पटेल, अ.नि. सविताबेन अंबालाभाई पटेल परिवार, प.भ. नरेन्द्रभाई (कोठारी) इत्यादि परिवारजनो ने लाभ लिया था। अनेक स्थान से पधारे हुए संतोने भी आशीर्वाद दीये थे।

इस अवसर पर महिलाओ को दर्शन और आशीर्वाद देने के लीये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप मोटा गादीवालाश्री पदारे थे । यजमान परिवार की महिलाओने प.पू. मोटा गादीवालाश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

सभा संचालन शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मकनसर) ने सुंदर रुप से कीया था। सभी हरिभक्तोने अलौकिक लाभ लेकर और प्रसाद लेकर धन्य हुए थे।(कोठारीश्री कोचरब मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली में सत्संग सभा

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली के द्वारा पीछले काफी समय से प्रतिमास सत्संग सभा का आयोजन कीया जाता है। दि. १७-१२-२०१७ रविवार के दिन सभा का आयोजन किया गया था। जिस में आरती, विवेचन कथा शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजीने प्रारंभ कीया था। इस अवसर पर हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी पधारे थे और सभा में बिराजमान होकर दर्शन दीये थे । जेतलपुर से महंत शा. स्वामी आत्मप्रकासदासजी और पू. शा. पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे। इस अवसर पर अंजली मंदिर को बहुत सारे रंगो से सुंदर रुप से सुशोभीत कीया गया था। जिस में सेवा करने वाले यजमानो का सन्मान प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से किया गया था । इस के साथ शाकोत्सव का भी सुंदर आयोजन प.भ. ठक्कर

नरेन्द्रभाई शिवलालभाई परिवार और कनुभाई शांतिभाई काछीया और श्री रमेशचंद्र डाह्यालाल ठक्कर के यजमान पदे से हुआ था।

यह सभी यजमानोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी। प.पू. महाराजश्रीनी समग्र सभा को आशीर्वाद दीये थे। सभा का संचालन यहा के महंत वी.पी. स्वामीने किया था। अंजल मंदिर का अगला पाटोत्सव दि. २६-१-२०१८ से दि. ३०-१-२०१८ तक बड़ी धामधूम से मनाया जायेगा। युवक मंडल और महिला मंडल की सुंदर सेवा रही थी। कांकरिया युवक मंडल के द्वारा सुंदर कीर्तन भक्ति की गयी थी। अंजली मंदिर की अगली सभा जनवरी २०१८ के तीसरे रविवार के दिन होगी।(कोठारीश्री अंजली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा का दशाब्दी महोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारणघाट-गांधीनगर) की प्रेरणा और मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा (माणसा) में बिराजमान ठाकोरजी का दशाब्दी पाटोत्सव अ.नि. प.भ. गोविंदभाई मूलजीभाई चौधरी और मणीबेन गोविंदभाई चौधरी एवम् गं.स्व. जीवतबेन लक्ष्मणभाई चौधरी के संकल्प से और जीवन पर्व के अवसर पर श्रीमद् भागवत नवम स्कंद की पंचान्ह पारायण दि. १७-१२-२०१७ से दि. २१-१२-२०१७ तक स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्तापद से संगीत के सुमधुर ताल के साथ आयोजीत की गयी थी। इस अवसर पर अनेक भक्तोने छोटी-बड़ी सेवा में यजमान बनने का लाभ लिया था।

इस अवसर पर दि. २१-१२-२०१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे और उनके वरद् हस्त से ठाकोरजी की अन्नकूट आरती हुई थी। उसके बाद यजमानो का सन्मान कीया गया था और आशीर्वाद दीया था। अनेक स्थान से पधारे संतो में कालुपुर मंदिर के महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी इत्यादि संतो में अपनी अमृत वाणी का लाभ हरिभक्तो को दिया था। गाँव के सभी हरिभक्तोने इस महा अलौकिक अवसर का लाभ उठाकर धन्यता का अनुभव कीया था।(कोठारीश्री भीमपुरा)

मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में भागवत सप्ताह एवं दिव्य शाकोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारणघाट-गांधीनगर) की प्रेरणा और से और प.भ. भरतभाी प्रभुदास पटेल और अ.सौ. प्रज्ञाबेन भरतभाई पटेल के शुभ संकल्प से श्रीहरि के चरणो से अंकीत पावन तीर्थ भूमि मोटेरा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में दि. २५-१२-२०१७ से दि. ३१-१२-२०१७ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह रात्रीय पारायण स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद के साथ संगीत की मधुर सुर के साथ बड़े धामधूम से संपन्न हुई। हजारो हरिभक्तोने कथा श्रवण कीया और धन्य हुए थे। दि. २५-१२-२०१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे और समस्त सभा को आशीर्वाद दीये थे।

दि. ३१-१२-२०१७ के दिन कथा की पूर्णाहुति प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हस्ते से विधिवत रुप से हुई थी। और साथ में भव्य शाकोत्सव भी मनाया गया था। मोटेरा और आसपास के गाँव के भक्तोने कथा श्रवण, देव दर्शन और धर्मकुल दर्शन करके शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण करके अपने जीवन को धन्य बनाया था। अनेक स्थान से संत भी पधारे थे। सभा सुंदर संचालन स.गु. शा.स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था। मोटेरा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी। यजमान परिवार अलौकीक लाभ लेकर कृतार्थ हुआ था। (कोठारीश्री मोटेरा)

जमीयतपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और स.गु. शा. छपैयाप्रसाददासजी और पार्षद हार्दिक भगत की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा का ८ वाँ पाटोत्सव पटेल नारणभाई और पटेल कोकिलाबेन नारणभाई की और से मागसर सुद-८ के दिन धामधूम से मनाया गया।

इस अवसर पर ठाकोरजी की महापूजा अभिषेक, अन्नकूट विधिवत रुप से हुए थे। ठाकोरजी की अन्नकूट आरती पू. स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी, पू. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, स.गु. स्वामी रघुवीरचरणदासजी और उनके साथ यजमान परिवारने उतारी थी। यजमान परिवार का सन्मान संतो के द्वारा कीया गया था। हार्दिक भगत ने प्रसादी की साल और श्रीहरि के चरणारविंद भेट स्वरुप में दिये थे। पू. संतो के वरद् हस्तो से सभी भक्तो को शिक्षापत्री भेट स्वरुप मे दी गयी थी। गांधीनगर-नारणघाट मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामीने सुंदर सहकार दीया था। संतो ने शा.स्वामी छपैयाप्रसाददासजी और हार्दिक भगत का सन्मान कीया था।(हार्दिक भगत - कालुपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर का २८ वाँ पाटोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और महंत शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी (हिंमतनगर मंदिर)

की प्रेरणा से सर्वोपरी घनश्याम महाराज का २८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे और सर्व प्रथम नूतन मंदिर का निरीक्षण करके ठाकोरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। और समस्त सभा को प्रसन्नचित से आशीर्वाद दीये थे । पाटोत्सव के यजमान पटेल दिनेशभाई पुरषोतमदास (सांचोदर) थे। इस अवसर पर अनेक संत भी पधारे थे । और इस पुरे आयोजन में महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और श्री घनश्याम महिला मंडल ने अच्छी सेवा की थी।(जय एम. पटेल - हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल का रजत जयंती पाटोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और महंत शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी (हिंमतनगर मंदिर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ईलोल का रजत जयंती महोत्सव दि. १२-१२-२०१७ से दि. १६-१२-२०१७ तक धामधुम से मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमद् भागवत दशम स्कंद कथा स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनददासजी (अंजली) के वक्तापद के साथ हुई थी। साथ साथ त्रीदिनात्मक विष्णुयाग भी विधिवत रुप से संपन्न हुआ था।

दि. १६-१२-२०१७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । और उनके वरद् हस्त से ठाकोरजी की अन्नकूट आरती और यज्ञ की पूर्णाहुति हुई थी। उसके बाद वे सभा में बराजमान हुए थे और सभा को आशीर्वाद दीये थे।

समस्त महिलाओ के धर्मगुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री पधारे थे और बहनो को दर्शन आशीर्वाद का सुख देकर प्रसन्न हुए थे। इस अवसर पर जेतलपुर धाम से पू. शा. पी.पी. स्वामी, पू. स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, वाली मंदिर के कोठारी स्वामी हरिप्रसाददासजीने इस अवसर पर सुंदर मार्गदर्शन दिया था।

अनेक स्थान से बहुत सारे संत भी पधारे थे । समग्र आयोजन महंत शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी और कोठारी कीरीटभाईने कीया था। युवक मंडल ओर महिला मंडल ने सुंदर सेवा की थी।(जय एम. पटेल - हिंमतनगर)

महादेवनगर में सत्संग सभा

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से और महादेवनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रतिमास की आकरी गुरुवार के दीन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सभा आयोजीत होती है। जीस में संत पधारते हे और सर्वोपरी श्रीहरि और धर्मकुल के माहात्म्य के साथ सत्संग की वृद्धि हो एसी उपदेशात्मक कथा करके सुंदर लाभ देते है।

दि. ३०-११-२०१७ गुरुवार गांधीनगर मंदिर के स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी और सत्यसंकल्प स्वामीने भगवान श्रीहरि की कथा का सुंदर लाभ दिया था। इस विस्तार में बसे हुए हरिभक्तो को प्रतिमास की आखरी गुरुवार की सभा का लाभ लेने का विशेष अनुरोधहै।(कोठारी नटुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर में धनुर्मास धून

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर अहमदाबाद में सभी हरिभक्त साथ मिलकर धनुर्मास में सुबह ५-१५ से ६-१५ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून पुरा माह की थी । एकादशी की सुबह ४-४५ समय पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून के साथ प्रभात फेरी आयोजीत की गयी थी । प्रतिदिन रात्रि को धून भजन कीर्तन कीये गये थे । (श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल गोमतीपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में शाकोत्सव

धोलकाधाम निवासी श्री मोरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और मंदिर मंहत स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से एवम् कोठारी सत्यसंकल्पदासजी के मार्गदर्शन से दि. २२-१२-२०१७ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ पधारे थे और सर्व प्रथम श्रीमोरली मनोहरदेव के दर्शन करके अलौकिक शाक बघार अपने वरद् हस्त से संपन्न कीया था।

विशेष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ निश्रा में धोलका श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और धोलका देस के कोठारीश्री एक बैठक का आयोजन किया गया था जिस में प.पू. महाराजश्रीने धोलका देश के गाँवो में सत्संग के विशेष प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति सक्रिय रखने की विशेष आज्ञा दी थी। धनुर्मास में कोठारी स्वामी की प्रेरणा से युवक मंडल और धोलका के हरिभक्तोने पूरा माह श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून सुबर ७-१० से ८-०० बजे तक की थी।(सुरेशभाई पूजारा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वागोसणा में भव्य शाकोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और नारणघाट-गांधीनगर के महंत स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से और समस्त पाटीदार परिवार अहमदाबाद-

वागोसणा के सुंदर आयोजन से दि. २४-१२-२०१७ के दिन वागोसणा गाँव में भव्य शाकोत्सव मनाया गया जिस के मुख्य यजमान अ.नि. पटेल मंगलदास वल्लभदास पटेल ह. प्रहलादभाई, त्रिकमभाई, प्रविणभाई और सह यजमान गं.स्व. पटेल कांताबेन चंदुलाल मोतीदास ह. राजेशभाई और पंकजभाई, पटेल शकरीबेन भगुभाई ह. मुकेशभाई इत्यादि बहुत सारे हरिभक्तोने छोटी-बडी सेवा का लाभ लिया था । अनेक स्थान से पधारे हुए संतो ने शाकोत्सव का महिमा कथा के रुप में कहा था । हजारो हरिभक्तोने शाकोत्सव का दर्शन प्रसाद लेकर धन्य हुये थे ।(शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर जामसर (हालार) में भव्य शाकोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजश्री की कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली मंदिर के ट्रस्टी स.गु. शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से दि. १९-१२-२०१७ के दिन हालार प्रदेश का भव्य शाकोत्सव जामसर गाँव में भव्यता से मनाया गया ।

सर्वप्रथम जामसर मंदिर में कीर्तन भक्ति और उसके बाद भागवत कथा का रसपान शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंतश्री)ने कराया था । शाकोत्सव के अवसर पर अनेक स्थान से संत, सांख्ययोगी महिला और देशोदेश से हरिभक्त पधारे थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आगमन होते ही सर्व प्रथम मंदिर में ठाकोरजी की आरती उतारने के बाद पाधरीया हनुमानजी की आरती उतारकर वे सभा में विराजमान हुए थे । यजमान परिवारो के द्वरा पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी गयी थी । इस अवसर पर आयोजीत सभा में स.गु. शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजीने हालार के निष्ठावान सत्संग को सराहा था उसके बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने शाक का बघार कीया था । सभी हरिभक्तोने प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव कीया था । महिलाओने रोटला बनाने की सेवा और युवक मंडलने रसोई की सेवा निष्ठापूर्वक अर्पण की थी । समग्र कार्यक्रम का संचालन स.गु. आत्मप्रकाश स्वामी (मूली) ने किया था । (स्वामी आत्मप्रकाशदासजी - कोठारीश्री जामसर)

विदेश सत्संग समाचार

ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और यहा के मंदिर के महंत शा. भक्ति स्वामी और निलकंठ स्वामी की प्रेरणा से अपने ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में २, नवम्बर २०१७ से ४, नवम्बर-२०१७ तक तुलसी विवाह धामधूम से मनाया गया । मंदिर के होल में सुंदर रास-गरबा के साथ तुलसीजी और भगवान के विवाह हुआ था । जिस में यजमान परिवारोने सुंदर लाभ लिया था । संतो ने तुलसी विवाह का माहात्म्य समजाया था । और इस अवसर पर सेवा करने वाले सभी यजमानो का सन्मान भी किया गया था ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और भरतभाई भगत के मार्गदर्शन से अपने हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में दि. ३ से ४ नवम्बर २०१७ के दौरान सभी हरिभक्तोने साथ मिलकर तुलसी विवार बडी धामधूम से मनाया था । महिलाओने सुंदर राग में तुलसी माताका गरबा और रास गाये थे । दूसरे दीन भव्य वरयात्रा पूरे मंदिर परिसर में प्रदक्षिणा करते हुए लग्न प्रसंग में बिराजमान हुई थी । हरिभक्तोंने प्रसंग के अनुरुप यजमान बनकर वर और कन्या पक्ष और मातृ पक्ष का अलौकिक लाभ लेकर भव्य तुलसी वीवाह मनाया था । भरत भगतने तुलसी विवाह का सुंदर माहात्म्य समजाया था । इस अवसर पर सेवा करने वाले सभी यजमानो का सन्मान कीया गया था ।(प्रविण शाह)

पारसीपनी छपियाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे और प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से और यहाँ के पारसपनी मंदिर के महंत शा.स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी और स्वामी धर्मवल्लभदाजी की प्ररणा से अपने पारसीपनी छपियाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह में भव्य तुलसी विवार मनाया गया । महिलाओ के द्वारा रास गरबा के साथ विवाह मंडप में तुलसी माताका विवाह हुआ था । जिस में वर पक्ष, कन्या पक्ष और मातृ पक्ष यजमान बनकर हरिभक्तनो लाभ लिया था और धन्य हुए थे । पू. संतोने तुलसी माता का विवाह का माहात्म्य कथा के रुप में समजाया था । इस अवसर पर सेवा करने वाले सभी यजमानो का सन्मान कीया गया था ।(प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

शाकोत्सव

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

कालुपुर मंदिर में धनुर्मास से अवसर पर हवेली में पारायण का लाभ लेते हुए और रंगमहोल में श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज के दर्शन करते हुए महिला हरिभक्त ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से और प.पू. मोटा महाराजश्री के आशीर्वाद से और
प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षतामें अ.मु.स.गु. गोपालानंद स्वामी की जन्मभूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा धाम में

श्री गोपाललालजी हरिकृष्ण महाराज का ६५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

स.गु. गोपालानंद स्वामी जन्मस्थान हवेली उद्घाटन महोत्सव

प्रारंभ : दि. २१-०१-२०१८ महा सुद-४ रविवार • पूर्णाहुति दि. २५-०१-२०१८ महा सुद-८ गुरुवार
आयोजक : महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी, श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा धाम

लाइव टेलीकास्ट

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से
अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (भुंडीया) में

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

दि. ०७-०२-२०१८ से
दि. ०९-०२-२०१८

प्रेरणा : स.गु. शास्त्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर और नारणघाट महंतश्री)
निमंत्रक : कोठारीश्री एवम् समस्त सत्संग समाज, धरमपुर (भुंडीया) तह.जी. गांधीनगर

कथा प्रारंभ
दि. ०२-०२-२०१८ शुक्रवार
सुबह : ८-३० से ११-३०

पूर्णाहुति
दि. ०८-०२-२०१८ गुरुवार

श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण के वक्ता
स.गु. शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी - अंजली
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी - बापुनगर

निमंत्रक :
महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी और
सापावाडा सत्संग समाज

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोयद (प्रांतिज) में

श्रीहरि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

दि. ०६-०२-२०१८ से १०-०२-२०१८

वक्ता : स.गु. शास्त्री स्वामी रामक्रिष्नदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) निमंत्रक : स.गु. स्वामी प्राणजीवनदासजी (प्रांतिज महंत)